



(विज्ञापन)

माफीनामा

कल के विज्ञापन में "थोथे थानेदार" शब्द को "उल्टा चोट कोतवाल को डॉटे" जैसी ही एक लोकोक्ति के सन्दर्भ में न लेकर बच्चों के माता-पिता के संदर्भ में लिखे हमारे जन्मातों का अनर्थनिकाले जाने से मन काफी व्यथित है। पुलिस विभाग की भूमिका हमारे समाज में अति महत्वपूर्ण है। जब पुलिस जागती है, तब हम सभी सुरक्षित और चैन की नींद सो पाते हैं। उनके सहयोग से ही हमारा व्यापार और समाज सुचान ठप से चलता है। हमारा उद्देश्य किसी भी प्रकार से पुलिस विभाग या किसी अन्य जनमानस को ठेस पहुंचाने का नहीं था बल्कि संवेदनात्मक व्यापारिक जागरूकता फैलाना था। यदि पुलिस या किसी अन्य जनमानस को इस विज्ञापन से कोई दुःख पहुंचा है, तो हम सहदय क्षमा प्रार्थी हैं। हम इस विषय पर विदाम लगाते हुए पुनः इसके लिए क्षमा चाहते हैं। हमारा मानना है कि पुलिस विभाग की गरिमा सर्वोपरि है, और हम ऐसा कोई व्यापार नहीं चाहते जिससे उनकी प्रतिष्ठा पर किसी भी प्रकार की आँच आए। इसीलिए, हमने इस विषय को विज्ञापन में सबसे प्रमुख स्थान पर रखा है, ताकि हमारा संदेश स्पष्ट हो और किसी तरह का गलत अर्थन निकाला जाए।

आजकल लोग प्रीमियम लोकेशन के चक्कर में महंगे से महंगे घर खरीद रहे हैं लेकिन जब बात आती है बच्चों के खेलने और उनके संपूर्ण विकास की, तो यह घर एक कंक्रीट के जंगल के अलावा कुछ नहीं है। न आउटडोर गेम्स, न कलब हाउस, न स्पोर्ट्स एमेनिटीज और न ही ज़रूरी सुविधाएं—नतीजा? बच्चे मोबाइल, टैबलेट या लैपटॉप पर ही गेम्स खेलकर अपना बचपन बबादि कर रहे हैं। इस डिजिटल दुनिया का असर इतना गहरा हो गया है कि कई बच्चे बिना स्क्रीन देखे खाना तक नहीं खाते, और उनकी माताएँ उन्हें वीडियो दिखाकर खाना खिलाने को मजबूर हैं।

कभी हृष्ट-पुष्ट होने वाले भारतीय बच्चे आज शारीरिक ठप से कमजोर और मानसिक ठप से विकृत हो रहे हैं। यह दुखद है कि शहर की प्रीमियम लोकेशन में रहने और नामी स्कूलों में पढ़ने के बावजूद, वे सम्पूर्ण विकास से वंचित हैं।

आजकल अधिकतर बच्चे लगभग 5-10 साल की कच्ची उम्र में अनजाने में अपनी आँखें फोड़कर ज़िन्दगी भर के लिए चरमें का गिफ्ट ले लेते हैं, जिसके जिम्मेदार इनोसेंट बच्चे नहीं बल्कि उनके माता-पिता हैं, जिन्होंने बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास की ज़रूरत समझी बिना सिर्फ अपने स्टेटस के लिए या अपनी सुविधा के लिए सिर्फ प्राइम लोकेशन के चक्कर में बिना किसी आउटडोर गेम्स या स्पोर्ट्स एमेनिटीज वाला कंक्रीट का घर लिया था, क्या भरे ट्रैफिक की चिल्ल-पौं में प्राइम लोकेशन पर घर खरीदकर आपको गिनीज बुक में नाम लिखवाना था?

केंद्रिय सेजस्थान में 60 शानदार सुविधाओं में से 40 सुविधाएं खासतौर पर बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए हैं। यहां आपको वो सब कुछ मिलेगा जो आपके बच्चों के स्वस्थ भविष्य के लिए ज़रूरी है—आउटडोर गेम्स, इंडोर गेम्स, और स्पोर्ट्स सुविधाएं। क्योंकि हम कंक्रीट के जंगल वाला घर नहीं बल्कि एक वाइब्रेंट लाइफस्टाइल बेचते हैं।

AMAZING SETUP FOR KIDS AT KEDIA SEZASTHAN

SPORTS AMENITIES

- BASKET BALL COURT • BADMINTON COURT • SKATING RINK • LAWN TENNIS COURT
- MINI GOLF • CRICKET PRACTICE NET • BOX CRICKET • JOGGING LOOP • CYCLING TRACK

OUTDOOR AMENITIES

- RASHI GARDEN • OPEN AIR THEATRE • WETLAND PARK • KID'S PLAY AREA • SANDPIT
- OPEN GYM • LAP POOL • KID'S POOL • ROOF TOP WALK • MULTI PURPOSE LAWN
- MEDITATION ZONE • VOCATIONAL WORKSHOP SPACE • SENSORY WALK • NATURE TRAIL
- SAVANNA ELEVATED TRAIL • PICNIC POINTS • ADVENTURE PLAY AREA

INDOOR AMENITIES

- TUITION ROOM • LIBRARY • ART AREA • KID'S WORKSHOP AND PLAY AREA
- DISNEY THEME GAME ROOM • CONFERENCE ROOM • GYMNASIUM • YOGA AREA
- CARD AREA • CHESS AREA • CARROM AREA • TABLE TENNIS • BILLIARDS



अजमेर रोड, जयपुर

बड़ी-बड़ी कोठी बड़े-बड़े फ्लैट

KEDIA®

1800-120-2323
78770-72737

info@kedia.com
www.kedia.com
www.rera.rajasthan.gov.in
RERA No. RAJ/P/2023/2387

SCAN QR FOR
• LOCATION
• ROUTE MAP
• SITE 360 TOUR
• E-BROCHURE
• WALKTHROUGH



*T&C Apply

विचार बिन्दु

मनस्वी पुरुष पर्वत के समान ऊँचे और समुद्र के समान गंभीर होते हैं।
उनका पार पाना कठिन है। -माय

हिमाचल की गोद में एक रोमांचक यात्रा

हि मालय की दुर्गम चोटियों और बर्फीली घाटियों की ओर जाने का विचार ही हमें उत्साह से भर देता है। इस बार, मैंने और मेरी पत्नी पुष्पा पाण्डे ने हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्थानीय की यात्रा का फैसला किया। हमारे साथ इस यात्रा में हमारा बेटा पुष्प दीप पाण्डे भी था, जो अपनी मोटरसाइकिल पर 220 किलोमीटर की सहासिक यात्रा पर निकला। इस यात्रा में न केवल हिमालय की अद्वितीय सुंदरता को देखने का अवसर था, बल्कि इस क्षेत्र के अनूठे पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक पहाड़ों से भी झूलने होना था।

जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ के वातावरण को लालता और हरियाली से भर देता है। लेकिन हम अगे बढ़ते गए, के बाहरीयों का स्वरूप धीरे-धीरे बदलते गए। देवदार और आक के पेड़ों की जगह फर और चीड़ के पेड़ों के ले ली। यह परिवर्तन ऊँचाई का सकेत था, जहाँ जीवन की परिस्थितियाँ और भी कठिन हो जाती हैं।

शिमला से अगे बढ़ते हुए, करीब 100 किलोमीटर के बाद हमें सेव के बागान दिखाई देने लगा। ये बागान हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। लेकिन इन बागानों के बीच भी हमें हम महसूस हुआ कि जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं। सेव की खेती में चुनौतियाँ बढ़ती जा रही हैं, फिर भी किसानों का आत्मविश्वास और उनकी मेहनत हमें प्रेरित करती रही।

जैसे ही हम पूरे की ओर बढ़े, सेव के बागानों ने हमें अपनी सुंदरता से मन्त्रमुद्ध कर दिया। पिछली यात्रा में हमने देखा था कि हर पेंड सेवों से लदा हुआ है, और उनकी लालिमा सूजूर की किरणों में चमक रही है। यहाँ के किसान हमें बताते हैं कि जलवायल प्रेसेंज भारत के कुल सेव उत्पादन का लगभग 30% प्रतिशत योगदान देता है। लेकिन बैमोसम योगदान और ओलावृद्धि ने उत्पादन की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। इस बार की यात्रा में हमने फूलों से लदे सेव के बागान देखे। मजा आ गया।

किसानों ने हाई-डीसीलिन्टेशन और डिपीरिंग जैसी तकनीकों का उपयोग कर उत्पादन में सुधार किया है। जब हमने इन किसानों से बात की, तो उनकी चुनौतियों और उनके प्रयासों को सुनकर हम समझ पाए कि इस लाल सेवों को उत्पादन में कितनी मेहनत और धैर्य लगता है। लेकिन इस बीच, बालून ने आसाम को धेर लिया और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने हमारी यात्रा को और भी रोमांचक बना दिया।

पूरे में रुक्ख हमने हिमाचल के स्थानीय व्यञ्जनों का स्वाद लिया। थुक्का (नूबलसूप) की गर्माहट और मोमोज़ का आनेखा स्वाद ठंडी हवा में बहुत सुकृदार हो गया। साथ ही, हमें चंग (तिक्की बीयर) का स्वाद भी मिला, जो यहाँ की ठंडी जलवायु में शरीर को गर्म रखने का एक पारंपरिक तरीका है।

हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा तब शुरू हुआ, जब हम लाहौल और स्थीत घाटियों में प्रवेश करने लगे। चंद्रा और भागा नदियों का साथ हमें उनके बहाव की शक्ति और सुंदरता से खबर करता हुआ। यहाँ की ओर कश्मीर की ओर बहती है। इन नदियों का प्रवाह उन कठिनाइयों का प्रतीक था, जिनका सामना यहाँ के लोग हर दिन करते हैं।

स्थीत नदी, जो इस क्षेत्र की जीवनसेरेखा है, अपनी शांत धारा के साथ बहती हुई स्थीत घाटी को सीधी चढ़ती है। लेकिन इन नदियों का पानी भी जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हो रहा है। ग्लेशियरों के विलयन की दर में बढ़दू और बर्फबारी में कमी ने इन नदियों के प्रवाह को कम कर दिया है, जिससे यहाँ के लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

कानून की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में डलान से पैसे बिगड़ गया। हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम प्रायोग और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने

हिमाचल की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित हो। और यह संतुलन ही हमें एक

स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ की जीवनसेरेखा को देखते ही हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिक्की नवरत्न के उत्तर के उत्तर के अनुभव भी सुनने की मिली। हमें पत्ता पड़ा कि यहाँ की जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान नियन्त्रित हो रहे हैं। लोगों के बीच भी अध्यात्मिकता ने हमारे मन को प्रयास की जीवनसेरेखा को देखता है।

कानून की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में डलान से पैसे बिगड़ गया। हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम प्रायोग और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने

हिमाचल की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित हो। और यह संतुलन ही हमें एक

स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ की जीवनसेरेखा को देखते ही हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिक्की नवरत्न के उत्तर के उत्तर के अनुभव भी सुनने की मिली। हमें पत्ता पड़ा कि यहाँ की जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान नियन्त्रित हो रहे हैं। लोगों के बीच भी अध्यात्मिकता ने हमारे मन को प्रयास की जीवनसेरेखा को देखता है।

कानून की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में डलान से पैसे बिगड़ गया। हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम प्रायोग और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने

हिमाचल की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित हो। और यह संतुलन ही हमें एक

स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ की जीवनसेरेखा को देखते ही हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिक्की नवरत्न के उत्तर के उत्तर के अनुभव भी सुनने की मिली। हमें पत्ता पड़ा कि यहाँ की जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान नियन्त्रित हो रहे हैं। लोगों के बीच भी अध्यात्मिकता ने हमारे मन को प्रयास की जीवनसेरेखा को देखता है।

कानून की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में डलान से पैसे बिगड़ गया। हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम प्रायोग और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने

हिमाचल की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित हो। और यह संतुलन ही हमें एक

स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ की जीवनसेरेखा को देखते ही हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिक्की नवरत्न के उत्तर के उत्तर के अनुभव भी सुनने की मिली। हमें पत्ता पड़ा कि यहाँ की जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ के किसान नियन्त्रित हो रहे हैं। लोगों के बीच भी अध्यात्मिकता ने हमारे मन को प्रयास की जीवनसेरेखा को देखता है।

कानून की ओर बढ़ते हुए, रास्ते में डलान से पैसे बिगड़ गया। हमारे दिल की धड़कनें तेज कर दीं। लेकिन हम रुकने वाले नहीं थे। जैसे ही हम प्रायोग और अचानक बारिश शुरू हो गई, जिसने

हिमाचल की गोद में बिताए गए ये पल हमें यह सिखाते हैं कि जीवन का हर पहलू-चाहे वह प्रकृति हो, समाज हो या अर्थव्यवस्था-संतुलन पर आधारित हो। और यह संतुलन ही हमें एक

स्थायी और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसे ही हम शिमला की ठंडी हवा और देवदार के पेड़ों के बीच से गुज़रे, मन में रोमांच की एक लहर सी दौड़ गई। शिमला का धना जंगल, जिसमें देवदार, आक और चीड़ के पेड़ होते हैं, यहाँ की जीवनसेरेखा को देखते ही हैं।

हमारी यात्रा के दौरान हमें लोसर, यानी तिक्की नवरत्न के उत्तर के उत्तर के अनुभव भी सुनने की मिली। हमें पत्ता पड़ा कि यहाँ की जलवायु परिवर्तन के

#LOST ART
World Letter Writing Day

Digital media just doesn't quite carry the same personal level as this old method



For hundreds of years, communication took place through just a couple of ways, you either sat down and had a conversation with someone, or you wrote your thoughts and feelings down on a letter and had it delivered to them by courier. The nature of letters made them incredibly intimate, as each carried the indelible mark of its creator.

Everything from the subtle scents of your home and perfume, to snippets from your garden could be included in a mailed letter. Digital media just doesn't quite carry the same personal level as this old method, and *World Letter Writing Day* is your opportunity to remember the wonders of the 'hand-written word.'

Learn about World Letter Writing Day

World Letter Writing Day is all about paying tribute to the age-old form of communication, letter writing. World Letter Writing Day presents you with a great opportunity to reconnect with people that you may not have spoken to for

History

World Letter Writing Day was established by Richard Simpkin as a tribute to the joy and excitement he felt when a hand-written letter would arrive in his mailbox. His appreciation of the hand-written word came about as a result of a project he was working on, called 'Australian Legends,' he would send out letters to everyone he considered to be an Australian Legend, with the interest of arranging a personal interview and photography session. There was just something amazing about receiving a letter with the legends own personal touch to it, and it certainly doesn't hurt that while hand-written letters are collected, digital communication, certainly, is not.

How to celebrate

Ge out pen and paper and start writing! Picking whom to write to, too, can often be the hardest thing, but you should select an old friend or family member of any age. For the young, it can be novel for them to receive a written personal letter. It's just something that isn't done anymore and through doing so, you can share with them that unique and personal experience, that is, receiving a written letter from a loved one. If saved, it's something you can hold on to long past the time they fade from this earth, and you can't hold a digital email.

Another option is to send it to a grandparent or parent who you aren't around where there was no other option, when you wanted to communicate with someone far away. Phone calls were all very well and good, but they were quite expensive, and letters were

cheap to send through the post. Take the opportunity provided by *World Letter Writing Day* to work on your writing skills, and let a loved one know that they're worth a little extra effort. You don't have to send your letter to a friend or family member, though. There are plenty of other options. You could write a letter of encouragement to a patient in your local hospital. Something like this could really put a smile on someone's face and help them to push through with a difficult day. You could also write a letter of appreciation to an older mentor, or you could write a letter of encouragement and thanks to someone who is currently serving in the Military or has served in the Military. A *thank you letter* can go a very long way and make the recipient feel appreciated.

A CONTRADICTION CALLED UTPAL DUTT

Dutt strode like a *Colossus* over the realm of *Bengali theatre*, staging one production after another and, at the same time, trying to evolve a comprehensive theory of Epic Theatre which, the indefatigable Thespian hoped, should serve as a model for others. Utpal Dutt, closer to his own theatrical tradition and Stanislavski (the Russian theatre director and actor), aspired to raise his Epic Theatre based on the reinvigorating power of myths, while Bertolt Brecht formulated his vision by subjecting this very myth to question. In all his productions, some of them were breathtaking, Utpal Dutt achieved what he wanted to (in his own words), "reaffirm the violent history of India, reaffirm the material tradition of its people, recount again and again the heroic tales of grand rebels and martyrs."



Dr. Shoma A. Chatterji
Film Scholar,
Journalist & Author

His year completes 31 years since Utpal Dutt passed away on August 19, 1993. Yet, few remember his rich contribution to the history of the theatre in the country much less, his contribution to the world of cinema, both Hindi and Bengali, mainstream and off-mainstream. Dutt, who began his career as a stage actor when he was a schoolboy, in Shakespeare's *Richard III*, took theatre beyond the geographical parameters of the stage. Like Augusto Boal (the Latin American theatre personality who wrote *Theatre of the Oppressed*), Dutt felt that all theatre is political. He never wavered of stressing that theatre could never be meaningful if it does not consider the political ethos within which it has to negotiate the terms of the volatile and fluctuating relationships between and among human beings.

His career in films spans an oeuvre of more than 100 films, covering forty years. It covers a colourful range of characterizations, beginning from the upright and honest government officer in *Mrinal Sen's Bhuvan Shome* (1968) to Satyajit Ray's *Agantuk* (1991) and Gautam Ghose's *Padma Nadir Majhi* (1993). His range covered a happy mix of the comic and the villainous in Hindi mainstream cinema. He regaled the audience as the lovelorn *Bhavani Shankar Bajpai* in *Naram Garam*, smitten by the beauty of *Swarni Sampat*. And the audience hated him for his diabolic villainy in *Shakti Samanta's Amanush*. He played the despotic dictator to the hilt in Ray's *Hirak Rajar Deshe* while he used his *Bengali-ised Urdu* to make audiences laugh away in a delightful guest appearance in *Delhi Ghazi Do Anjane*.

"Visual images did not make any impact on me, neither during my childhood days, nor when I turned older," he once said when asked why he stepped into cinema much later in his life, after he had already done a lot of theatre. His entry into cinema was more by chance than by deliberate choice. When Shakespeareana International Theatre Company, led by Geoffrey Kendall, left India for good, Utpal Dutt's troupe con-

tinued to perform English plays. Once while they were performing *Othello*, the famous filmmaker,

Madhu Bose, came to watch the performance. He was then looking for a leading man to do his film, based on the life of the Indo-Anglian poet, Michael Madhusudan Dutt. Impressed by Dutt's interpretation of *Othello*, Bose offered him the role. Dutt was then looking for an opportunity to widen his canvas and to branch out and seek fresh pastures, so, he accepted the offer happily. This was the beginning of a long career, marked by a thick portfolio of films in Hindi and Bengali, while the stage remained his first love and his troupe continued its movement in serious political theatre.

Mrinal Sen once, admiringly, described Dutt as 'an actor who could play roles from the sublime to the ridiculous with equal flair.' When asked how he made the switch from an outright commercial *masala* film like *Faryad* to a Ray film like *Joy Baba Phelunath*, Dutt said, "I have developed a tech-

nique of shutting my mind off, switching it off, rather: I will not be able to tell you even the names of the films I have acted in or even the name of the character I have just finished shooting." Among some of his memorable films from both mainstream and off-mainstream cinema are *Bhuvan Shome*, *Ek Adhuri Kahani* and *Chorus*, directed by Mrinal Sen, *Agantuk*, *Jana Aranya*, *Joy Baba Phelunath*



and *Hirak Rajar Deshe*, directed by Satyajit Ray. *Paar* and *Padma Nadir Majhi*, directed by Gautam Ghose, *Bombay Talkie*, and *Shakespeare Wallah*, directed by James Ivory. *Jukti Takko Aar Gappo*, directed by Ritwik Ghatak, *Guddi* directed by Hirshikesh Mukherjee, *Sucami* and *Golmaka*, directed by Basu Chatterjee, *Amanush*, directed by Shakti Samanta, and *Michael Madhusudan*, directed by Madhu Bose, among many others. His villain in *Amanush* was backed by a string of theatrical tricks and turned out to be a big hit with the audience. His performance in *Agantuk* brought him the Best Actor Award from the Bengal Film Journalists' Association in 1992. Dutt also directed some meaningful films during his career. These were *Megh* (1961), a psychological thriller, *Ghoon Bhanger Gaan* (1965), *Jhor* (1975), *Baisakhi Megh* (1981), *Maa* (1983) and *Inquilab ke Baad* (1984). None of these films

Dutt represented India. In his presentation, Dutt explored the symbiotic relationship between



A scene from the film 'Amanush.'

#TRIBUTE



A scene from film 'Agantuk.'



"Visual images did not make any impact on me, neither during my childhood days, nor when I turned older," he once said when asked why he stepped into cinema much later in his life, after he had already done a lot of theatre. His entry into cinema was more by chance than by deliberate choice.

He carried on from one experiment to the next, not once moving away from his belief in the need to merge politics, literature and theatre. "I do not advocate that things be portrayed either as black or white. On the contrary, I say that is precisely what Marxism disallows. There is no such thing as black and white in life."

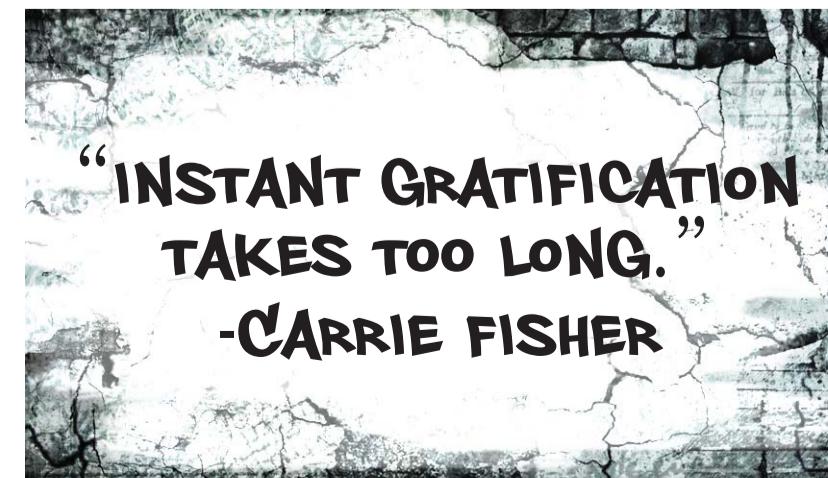
and *Hirak Rajar Deshe*, directed by Satyajit Ray. *Paar* and *Padma Nadir Majhi*, directed by Gautam Ghose, *Bombay Talkie*, and *Shakespeare Wallah*, directed by James Ivory. *Jukti Takko Aar Gappo*, directed by Ritwik Ghatak, *Guddi* directed by Hirshikesh Mukherjee, *Sucami* and *Golmaka*, directed by Basu Chatterjee, *Amanush*, directed by Shakti Samanta, and *Michael Madhusudan*, directed by Madhu Bose, among many others. His villain in *Amanush* was backed by a string of theatrical tricks and turned out to be a big hit with the audience. His performance in *Agantuk* brought him the Best Actor Award from the Bengal Film Journalists' Association in 1992. Dutt also directed some meaningful films during his career. These were *Megh* (1961), a psychological thriller, *Ghoon Bhanger Gaan* (1965), *Jhor* (1975), *Baisakhi Megh* (1981), *Maa* (1983) and *Inquilab ke Baad* (1984). None of these films

Dutt represented India. In his presentation, Dutt explored the symbiotic relationship between



A scene from the film 'Amanush.'

THE WALL

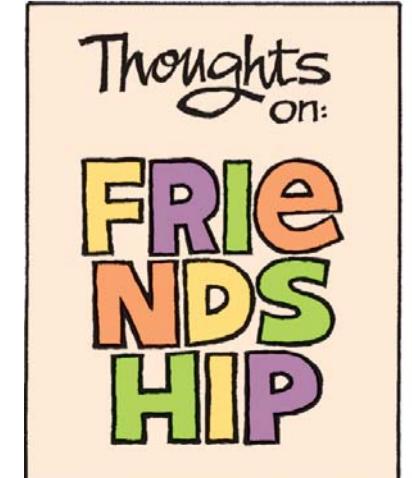


BABY BLUES



Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS



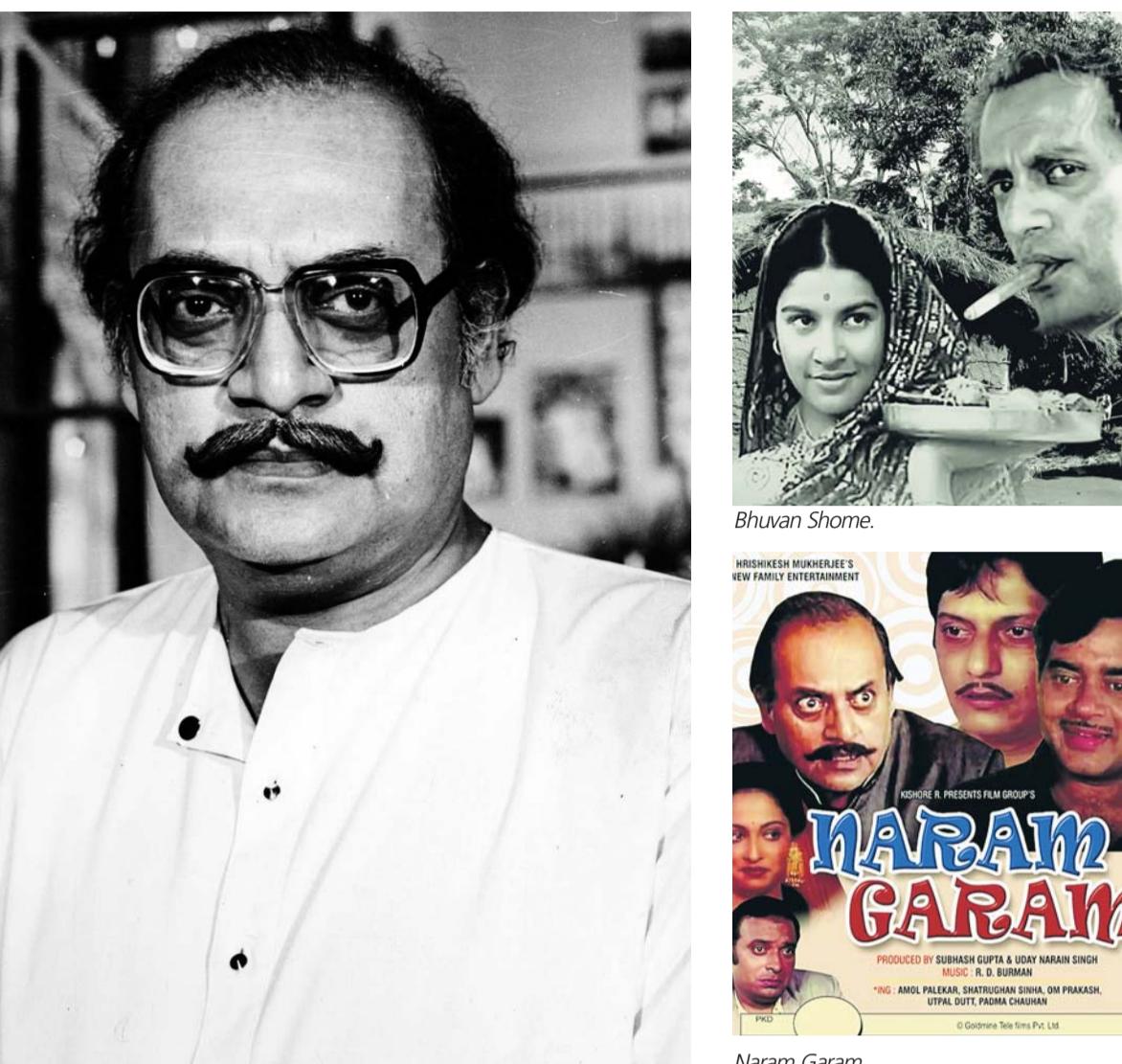
By Jerry Scott & Jim Borgman



Acne Positivity Day

Imples on the face and body can bring about a literal rash of issues that can be painful, frustrating, and even embarrassing. People, who have acne, can struggle with severe confidence issues, having a negative impact on the self-image. With at least 9% of people worldwide affected by acne, this is a concern that affects hundreds of millions of people. *Acne Positivity Day* here to change the stigma behind acne, recognizing that all humans deserve acceptance and everyone can embrace their unique journeys with acne!

P



#HOUSEKEEPING

Plants That Repel Mosquitoes



These are the plants to get, if mosquitoes frequent your home.



Mosquitoes are never a pleasant sight in or around your home. These unwelcome guests leave nasty bite marks that they leave behind on our skin, which can cause it to swell with an inflamed and itchy rash. In extreme cases, these insects can also transmit fatal diseases, some bite including the likes of malaria and dengue fever. That's why this is a pest you should deal with as soon as possible. And while it's handy to know how to get rid of mosquitoes, if you can keep them away from your home in the first place, you can save yourself a lot of trouble. One way in you can deter mosquitoes is by having the right plants on your side. There are many mosquito-repelling plants, which will actively keep these pests out of your home. If you're keen to take advantage, we've listed some here.

Marigolds

The plant to make to this list is marigolds. The orange and yellow blooms will make a pleasant addition to any garden, and such a plant can reduce your pest problems at the same time. This is because it contains a compound often found in insect repellents, known as limonene. This produces a citrusy aroma that mosquitoes just can't stand. So, these pests will actively steer clear, while beneficial insects, such as ladybirds and butterflies, will flock from far and wide.



Lavender

Lavender is often used all over the home. Its popular fragrance can be found in soaps, candles and detergents, so, you may already be using it without knowing it. Plus, lavender oil can be used for health and wellness purposes, as well, such as helping us sleep or relieving stress. If that weren't enough, the plant itself is beautiful on display and its vibrant, purple flowers can add a striking pop of color to any home. The good news is, while we may love this fragrance, mosquitoes do not. In fact, the smell of lavender, whether fresh, dried or in oil form, will repel them and keep them away. Not only that, lavender is effective on flies, ants and even rodents for the same reason, so, it's a handy pest-repellent plant to have around the home.



Rosemary is a versatile plant to say the least. The oil can be used to stimulate hair growth, the fragrance is often found in bathroom products and, as an herb, it can be used to spruce up all kinds of dishes in the kitchen. On top of all that, it can be beautiful when in bloom, with delicate blue flowers growing along the stem. The uses don't stop here either. While we may enjoy the smell of rosemary, it's no friend of mosquitoes, with the insect actively avoiding it. In fact, rosemary can repel all kinds of flies as well as ants. So, it's a great addition to keep your home pest-free in general.



The final plant in our list is sage. We add this herb to our recipes to enrich the flavour and aroma. It also actively repels mosquitoes and flies as well, particularly when the leaves are dried and burnt, releasing the oils as a vapour. Alternatively, the leaves can be strategically placed around your home for a deferring effect as well. Sage is straightforward to grow. It can be planted indoors in containers or outside in your flower beds. It prefers sitting in the sun, so, a windowsill would work well indoors, and the soil should be well-drained.

